4. धार्मिक विविधताएँ (Religious Diversities)

भारतीय समाज व संस्कृति एक अनुपम विशेषता धर्मों की विविधताएँ हैं। मोटे रूप में कहा जा सकता है कि भारत विभिन्न धर्मों की लीलाभूमि है। यहाँ एकाधिक धर्म और उसके अनुयायी कितने ही वर्षों से साथ-साथ रहते हैं और अब भी रह रहे हैं। यही कारण है कि हिन्दू धर्म के अगणित रूपों और सम्प्रदायों के अतिरिक्त इस देश में बौद्ध, जैन, सिख, इस्लाम, ईसाई आदि धर्मों का प्रचलन है। केवल हिन्दू धर्म के ही विविध सम्प्रदाय व मत सारे देश में फैले हुए हैं, जैसे वैदिक धर्म, पौराणिक धर्म, सनातन धर्म, शाक्त धर्म, शैव धर्म, वैष्णव धर्म, राधा बल्लभ सम्प्रदाय, नानक पन्थ, आर्य समाज, ब्रह्म समाज आदि। इनमें से कुछ धर्म साकार ईश्वर की पूजा करते हैं तो कुछ धर्म निराकार ईश्वर की आराधना करते हैं; कोई धर्म बलि और यज्ञ पर बल देता है तो कोई अहिंसा का पुजारी है,

Scanned with CamScanner

किसी धर्म में भक्ति-मार्ग की प्रधानता है तो किसी में ज्ञान-मार्ग की। आइये, इनमें से कुछ प्रमुख धर्मों का संक्षिप्त रूप में अध्ययन करें—

(i) हिन्दू धर्म (Hinduism)—राष्ट्रीय स्तर के धर्मों में हिन्दू धर्म का स्थान सर्वप्रमुख है क्योंकि भारत की कुल जनसंख्या के प्राय: 84 प्रतिशत लोग इसी धर्म के अनुयायी हैं, जो कि संख्या में प्राय: 80 करोड़ हैं। वैदिक धर्म हिन्दू धर्म का आदि रूप है। आर्यों का यह धर्म आरम्भ में सादा और सरल था। इस धर्म के अन्तर्गत अनेक दैवी शक्तियों तथा प्राकृतिक शक्तियों, जैसे सूर्य, चन्द्र, आकाश, मारुत, वायु आदि की उपासना की जाती थी। पर बाद में इन देवी-देवताओं का मूर्त रूप ही उपासना के विषय बन गये। इनमें ऊँच-नीच का कोई प्रश्न नहीं है। जिस-जिस क्षेत्र का जो-जो देवता है वह उस-उस क्षेत्र में प्रधान माना गया है। उनकी अनुकम्पा या दया को प्राप्त करने के लिए उसकी आराधना की जाती थी। आराधना प्रार्थनाओं और यज्ञों द्वारा होती थी। प्रार्थना मन्त्रों का उच्चारण करके की जाती थी। ये देवी या देवता तेजोमय और प्रकाशमय तत्व के प्रतीक हैं। अपार शक्ति, उदारता, सर्वज्ञता, दयालुता, निश्छलता और अमरता उनके अन्य दैवी गुण माने गये हैं। पाप, असत्य और अपराध के लिए ये दण्ड देते हैं और सदाचार, पुण्य कर्मों और यज्ञों से परितुष्ट होकर ये उदारतापूर्वक वरदान देते हैं। वैदिक धर्म में देवताओं को परितुष्ट व प्रसन्न करने के लिए अनेक प्रकार के यज्ञों का विधान है जो कि आगे चलकर अत्यन्त जटिल, दुरूह और रूढ़िवादी हो गये। उपनिषदों में यज्ञों के कर्म-मार्ग अर्थात् वैराग्य, संसार-त्याग तथा ज्ञान द्वारा मुक्तिप्राप्ति के आदर्श का प्रतिपादन किया गया है। डॉ. यादव ने लिखा है कि इस ज्ञान-मार्ग में ब्रह्म अथवा आत्मा को ही परम सत्य कहा गया है जिसके जान लेने से सब कुछ ज्ञात हो जाता है। इस परम सत्य का स्वरूप सच्चिदानन्द (सत् + चित् + आनन्द) शब्द से स्पष्ट हो जाता है। 'सत्' का अर्थ है ब्रह्म अथवा आत्मा की सत्ता; 'चित्' का अर्थ चेतन है, इससे उसके आध्यात्मिक स्वरूप का बोध होता है; 'आनन्द' शब्द से सूचित होता है कि वह आनन्दमय है। यही विश्वव्यापी परम तत्व सम्पूर्ण भौतिक जगत् एवं समस्त प्राणियों के आत्म-तत्व का कारण है। इसी के एकात्वमय, नित्य, आध्यात्मिक तथा आनन्दमय स्वरूप की सच्ची अनुभूति हो जाने पर मनुष्य को आत्म-साक्षात्कार अथवा ब्रह्म-प्राप्ति हो जाती है। फिर वह संसार के बन्धन अथवा अविद्यामूलक कर्मों से उत्पन्न जन्म-मरण के चक्र से मुक्त हो जाता है—उसे मोक्ष मिल जाता है और यही उपनिषदों में जीवन का चरम लक्ष्य माना गया है।

पर यज्ञों का कर्मकाण्ड और उपनिषदों का ज्ञान-मार्ग अत्यन्त जटिल व गूढ़ होने के कारण अधिक व्यापक न हो सका। फलत: एक सार्वजनिक धार्मिक धारा का विकास हुआ। यह पौराणिक धारा थी जो कि धर्म व धार्मिक कृत्यों को अधिक सरल ढंग से प्रस्तुत करने के कारण अधिक लोकप्रिय हो सकी। इस पौराणिक धर्म में चार विचार प्रधान थे—(1) ब्राह्मण ग्रन्थों द्वारा प्रतिपादित यज्ञों का विरोध, (2) पशु-बलि का विरोध और अहिंसा की महत्ता, (3) आत्मा, परमात्मा सम्बन्धी गूढ़ प्रश्नों की उपेक्षा। शम, दम, इन्द्रिय-निग्रह बल, आध्यात्मिक दृष्टिकोण की अपेक्षा व्यावहारिक दृष्टिकोण की प्रधानता, आचारशुद्धि की महत्ता और (4) अव्यक्त एवं निर्गुण ब्रह्म के श्रवण, मनन द्वारा साक्षात्कार के स्थान पर भक्तिपूर्वक सगुण ईश्वर की उपासना का विश्वास। इन्हीं चार आधारों पर आगे चलकर वैष्णव, शैव, जैन, बौद्ध आदि धर्मों का विकास हुआ।

पौराणिक धर्म में, जिसकी व्याख्या पुराणों में मिलती है, वैदिक धर्म में शिव, विष्णु आदि देवताओं को ग्रहण किया गया तथा साथ ही दुर्गा, काली आदि देवियों की पूजा भी आरम्भ की गई। ब्रह्मा, विष्णु और शिव को क्रमश: विश्व का स्रष्टा, रक्षक और नाशक मान लिया गया। अन्य अनेक देवी-देवताओं की कल्पना की गई और जीवन के विभिन्न पक्षों से उन्हें सम्बद्ध कर दिया गया, जैसे—विद्या की देवी सरस्वती, धन की देवी लक्ष्मी आदि। साथ ही वैदिक यज्ञों को संक्षिप्त कर पूजा का ऐसा एक रूप दे दिया गया जिसे करना सर्वसाधारण के लिये सरल हो। पुष्प, माल्य, धूप, दीप और नैवेद्य द्वारा पूजा का विधान किया गया। भक्ति का विकास भी पौराणिक धर्म में हुआ। धार्मिक उत्सव, दान व्रत, तीर्थ-यात्रा, मूर्ति-पूजा, मन्दिर आदि धर्म के प्रधान अंग बन गये। शरीर पर भस्म लगाने तथा तिलक धारण करने की प्रथा का प्रचलन भी पुराणों के कारण हुआ। इस सारे परिवर्तन व परिवर्धन के फलस्वरूप ही हिन्दू धर्म अधिक व्यावहारिक व लोकप्रिय बन सका। हिन्दू धर्म का यही पौराणिक रूप अधिकांश हिन्दू जनता में आज तक विद्यमान है।

(ii) इस्लाम धर्म (Islamism)—मध्य युग से इस्लाम धर्म भी भारत का एक प्रमुख धर्म बन गया है। 'इस्लाम' का अर्थ होता है समर्पण अथवा उत्सर्ग, जिसका अभिप्राय है अल्लाह की इच्छा के सामने झुकना। इस्लाम केवल कुरान में विश्वास करने का आदेश ही नहीं देता अपितु वह ईश्वरेच्छा के प्रति समर्पण का भाव

Scanned with CamScanner

माँगता है। इस धर्म के संस्थापक मुहम्मद साहब (570-632 ई.) थे, जिनका आविर्भाव अरब में हुआ था। इस्लाम एकेश्वरवादी धर्म है। अल्लाह एक है और उसके अलावा अन्य कोई देवता नहीं है। वह सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ और करुणामय है। उसने धर्म के सम्बन्ध में पथभ्रष्ट मानव को जागरूक रखने तथा सही मार्ग बतलाने के लिए समय-समय पर अपने पैगम्बरों को भेजा है और मुहम्मद साहब अन्तिम पैगम्बर (नबी) हैं। यह धर्म भी कर्म के परिणामों पर विश्वास करता है। पाप कर्म करने वाले नास्तिक को मृत्यु के बाद अत्यधिक दु:ख झेलना पड़ता है, जबकि अच्छे कर्म वाले तथा धर्मात्माओं को अनन्त सुख मिलता है। अल्लाह पर अटूट विश्वास रखो और हर काम के बीच उन्हें याद करो—यही इस्लाम का आदेश है। सभी मुसलमान अल्लाह की ही सन्तान हैं, अत: वे सब भाई-भाई हैं। इस प्रकार मुसलमानों में भ्रातृ-भाव पनपाने में इस्लाम का योगदान अनूठा है। इसके अतिरिक्त संयम, परोपकार, निर्लोभिता, क्षमा, ईमानदारी, निर्धनों की सहायता के लिये 'जकात' देना—ये सब इस धर्म के प्रमुख नैतिक नियम हैं। दिन में पाँच बार नमाज, प्रत्येक शुक्रवार को सामूहिक नमाज, रमजान के महीने में रोजा (दिन का पूर्ण उपवास) और मक्का की तीर्थयात्रा (हज) यही प्रधानत: इस धर्म का क्रिया-पक्ष है। इस्लाम अवतारवाद, मूर्तिपूजा तथा ऊँच-नीच के भेद-भाव का घोर विरोधी है। वह मानव-समानता के आदर्श को स्वीकार करता है।

कुरान मुसलमानों का पवित्रतम धर्मग्रन्थ है। कुरान के अनुसार, "सदाचार इसमें नहीं है कि तुम अपने मुँह को पूर्व और पश्चिम की ओर करो, बल्कि सदाचार का अर्थ है—जो भी ईश्वर, अन्तिम दिन, देवदूत, कुरान तथा पैगम्बर में विश्वास करते हैं और जो ईश्वर के प्रेम के लिये अपना धन अपने भाई-बन्धुओं, अनाथों, निर्धनों, यात्रियों तथा भिक्षुकों को और बन्दियों को छुड़ाने के लिये देते हैं और जो प्रार्थना करते हैं और दान देते हैं और जो अपने अनुबन्ध तथा इकरार करते हैं और जो विपत्ति, कठिनाई तथा अशान्ति के समय धैर्यशील होते हैं और जो नियमों से डरते हैं, वे सब सदाचारी होते हैं।"

इस्लाम में एक प्रकार का रहस्यवाद है जिसे सूफी मत कहा गया है। सूफी मत का मूल स्रोत कुरान और मुहम्मद साहब का जीवन है, परन्तु इसमें हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म, ईसाई धर्म, आदि का भी प्रभाव है। इस मत ने सभी धर्मों के प्रति सहिष्णुता की भावना रखने का आदेश दिया क्योंकि ईश्वर सभी धर्मों में दृष्टिगोचर होता है। "प्रत्येक सूफी का उद्देश्य ईश्वर में अपनी आत्मा का विलीनीकरण है। वह ईश्वर को अपनी इच्छा समर्पित कर देता है, अपने पापों के लिये पश्चाताप करता है, स्वच्छता, प्रार्थना, व्रत, उपवास, दान और तीर्थ-यात्रा के नियमों का पालन करता है, शारीरिक भावनाओं और एकान्तवास व मौन से क्रोध, गर्व, ईर्ष्या आदि दुर्गुणों का दमन करता है। यह सर्वप्रथम अवस्था है। द्वितीय अवस्था में वह आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करता है। सांसारिक वस्तुओं के प्रति उसमें विरक्ति की भावना हो जाती है। अन्तरात्मा के प्रकाश और अनन्त प्रेम से वह ईश्वर में विलीन होने का प्रयास करता है। प्रत्येक सूफी को आध्यात्मिक गुरु (पीर या शेख) की आवश्यकता होती है जो कि उसके आचार-विचार को नियन्त्रित कर उसकी आध्यात्मिक प्रगति की देखभाल करता है। ध्यान, भजन, नृत्य, गीत और प्रेम से भी सूफी ईश्वर का साक्षात्कार करता है। मोक्ष-प्राप्ति के लिये सूफी मत में साधना की पाँच सीढ़ियाँ मान ली गई हैं—(1) ईश्वर की आराधना जो उसी की आज्ञानुसार हो, (2) भक्ति अर्थात् ईश्वर के प्रति आत्मा का आकर्षण, (3) एकान्त स्थान में ईश्वर का ध्यान, (4) ज्ञान अथवा ईश्वर के गुणादि का दार्शनिक विचार और (5) भावोद्रेक अर्थात् ईश्वरी शक्ति तथा प्रेम के पूर्ण प्राप्त हो जाने पर शरीर का भान न रह जाना। वास्तव में सूफी मत गहन भक्ति का धर्म है; प्रेम इसकी तीव्र उत्कण्ठा है; कविता, नृत्य, भजन इसकी पूजा है और ईश्वर में विलीन हो जाना इसका उद्देश्य है।"

(iii) **ईसाई धर्म** (Christianity)—ईसाई धर्म मूल रूप में यहूदी धर्म की पृष्ठभूमि में विकसित हुआ था। ईसा मसीह, जो कि ईसाई धर्म के संस्थापक थे, के जन्म के पूर्व यहूदी लोग यह विश्वास करते थे कि शीघ्र ही यहोवा ईश्वर किसी पैगम्बर को भेजेगा जो कि शत्रुओं को हराकर उनको स्थाई रूप से न्याय दिलायेगा। वह मसीह होगा और कालान्तर में ऐसा ही हुआ। ईसा मसीह का इस संसार में प्रादुर्भाव हुआ, जिनका सन्देश आज भी विश्व के कोने-कोने में अमर है।

ईसाई धर्म की शिक्षाएँ व उपदेश (Preachings of Christianity)—ईसाई धर्म की शिक्षाओं व उपदेशों का आधार ईसाइयों का धर्म ग्रन्थ 'बाइबिल' (Holy Bible) है। बाइबिल के दो प्रमुख भाग हैं। पहला भाग 'पुराना नियम' (Old Testament) और दूसरा भाग 'नया नियम' (New Testament) कहलाता है। 'पुराना नियम' वास्तव में यहूदी धर्म का धर्मग्रन्थ है और मूलत: इसे हिब्रू (Hebrew) भाषा में लिखा गया है, यद्यपि अंग्रेजों व अन्य भाषाओं में इसका अनुवाद भी किया गया है। 'नया नियम' वास्तव में ईसाई धर्म का आधार

Scanned with CamScanner

है। ये मूल रूप में यूनानी भाषा में लिखे गए हैं और विभिन्न भाषाओं में इसके अनुवाद उपलब्ध हैं। इनमें ईसा मसीह के संदेश संकलित हैं। ईसाई धर्म की कुछ प्रमुख शिक्षाएँ व उपदेश निम्नलिखित हैं—

1. ईसाई धर्म एकेश्वरवाद की शिक्षा देता है और यह मानता है कि ईश्वर एक है। ईसा मसीह का उपदेश है कि एक ईश्वर में विश्वास करो। उसके प्रति एकनिष्ठ और दृढ़ विश्वासी बनो। इस धर्म के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति ईश्वर से सीधा सम्पर्क स्थापित कर सकता है और इसके लिए पूजा-पाठ और विधि-निषेधों की कोई आवश्यकता नही है। इसीलिए ईसाई धर्म मूर्तिपूजा का विरोध करता है।

2. ईसाई धर्म सदाचार मूलक है। ईसा मसीह ने अपने उपदेशों में सदा इस बात पर बल दिया कि हमें सबके प्रति सदा सच्चा और ईमानदार रहना चाहिये, कष्ट और तकलीफ में सबका साथ देना चाहिए और दु:ख व सुख में मुस्कराते रहना चाहिए। ईसा मसीह ने कहा "तुम सुन चुके हो कि आँख के बदले आँख और दाँत के बदले दाँत, परन्तु मैं तुमसे यह कहता हूँ कि बुरे का सामना न करना, परन्तु जो कोई तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे, उसकी ओर दूसरा भी फेर दे। ..... मैं तुमसे कह चुका हूँ कि व्यभिचार न करना, जो कोई किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाले, वह अपने मन में उससे व्यभिचार कर चुका। ..... जो कुछ तुम चाहते हो कि मनुष्य तुम्हारे साथ करे, तुम भी उनके साथ वैसा ही करो। .....अपने लिए पृथ्वी पर धन इकठा न करो, जहाँ कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं और जहाँ चोर सेंध लगाते और चुराते हैं; परन्तु अपने लिए स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहाँ न तो कीड़ा और न काई बिगाड़ते हैं और जहाँ न चोर सेंध लगाते हैं। कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता ..... तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते।"

3. ईसाई धर्म समस्त मानव-जाति के भ्रातृभाव की शिक्षा देता है। ईसा मसीह के अनुसार, सभी मनुष्य एक ही परम पिता परमेश्वर की सन्तान हैं और इसीलिए भाई-भाई तथा समान हैं। ईसा मसीह अपने संदेश में कहते हैं, "तुमने सुना है कि यह कहा गया है, तू अपने पड़ोसी से प्यार करेगा और अपने शत्रु से घृणा करेगा; परन्तु मैं तुमसे कहता हूँ कि अपने शत्रुओं से प्यार करो, जो तुमसे घृणा करते हैं; उनसे तुम नम्रता से व्यवहार करो, जो तुम्हें श्राप देते हैं; उन्हें आशीर्वाद दो, जो तुम्हें गाली देते हैं; उनके लिए दुआयें करो, ताकि तुम अपने पिता के बालक बन सको जो कि स्वर्ग में है क्योंकि वह अपने सूर्य को शुभ और अशुभ दोनों पर चमकाता है और न्यायी तथा अन्यायी दोनों पर वर्षा करता है। अत: सबसे प्रेम करो—सबके प्रति यह प्रेमभाव ही ईश्वर के प्रेम में बदल जायेगा और तुम ईश्वर के राज्य में प्रवेश पाने के अधिकारी बन जाओगे ..... कभी निराश मत होओ, तुम्हें इसका पुरस्कार अवश्य ही प्राप्त होगा।"

4. ईसाई धर्म ने ईश्वर की निष्पक्षता को लोगों के सामने रखा और प्रेम, करूणा, मानव-सेवा, अहिंसा, त्याग और परोपकार का संदेश दिया। ईसा मसीह ने अपने उपदेशों के माध्यम से संतप्त संसार, दु:खी और असहाय जनता के लिए नवीन आशा और जीवन का मार्ग प्रशस्त किया। प्रभु यीशु मसीह ने कहा, "धन्य हैं वे जो निर्धन हैं क्योंकि स्वर्ग का साम्राज्य उन्हीं का है; धन्य है वे जो शोक करते हैं क्योंकि वे शांति पायेंगे; धन्य हैं वे जो नम्र हैं क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे; धन्य हैं वे जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं क्योंकि वे तृप्त किये जायेंगे; धन्य हैं वे जो दयावन्त हैं क्योंकि उन पर दया की जायेगी; धन्य वे हैं जिनके मन शुद्ध हैं क्योंकि वे ईश्वर को देखेंगे; धन्य वे हैं जो मेल करवाते हैं क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलायेंगे; धन्य हैं वे जो धर्म के कारण सताये जाते हैं क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।"

ईसा मसीह ने दु:खी और असहाय जनता को समझाया कि "सम्पदा में विश्वास करने वाले लोगों का ईश्वर के राज्य में प्रवेश पाना बहुत कठिन है। सुई के छेद में ऊँट का प्रवेश होना वास्तव में बहुत कठिन कार्य है। सुई के छेद में ऊँट का प्रवेश करना ईश्वर के राज्य में धनिकों के प्रवेश पाने से कहीं अधिक सुगम है।" साथ ही "माँगो और वह तुम्हें मिलेगा, खोजो और उसे तुम पाओगे, दरवाजा खटखटाओ और वह तुम्हारे लिए खुल जायेगा। क्योंकि जो कोई भी माँगता है वह पाता है और जो कोई भी खोजता है वह ढूँढ़ लेता है और जो कोई भी दरवाजा खटखटाता है वह उसके लिए खुल जाता है..... इसीलिए जो कोई भी मेरे इन वचनों को सुनता है और उन पर अमल करता है, मैं उसको बुद्धिमान मनुष्य की तरह मानूँगा जिसने एक चट्टान पर अपना मकान बनाया और वर्षा उतरी और तूफान आये और हवाएँ बहीं और इस मकान से टकरायीं और वह नहीं गिरा, क्योंकि वह एक चट्टान पर आधारित था।"

प्रभु यीशु ने अपने मुख्य शिष्यों को अन्तिम संदेश देते हुए कहा था, "मैं तुम्हें एक नया आदेश देता हूँ कि [illegible] होगे। इससे

Scanned with CamScanner

सब वह जानेंगे कि तुम मेरे शिष्य हो यदि तुम्हें एक-दूसरे के प्रति प्यार है।'' प्रभु यीशु का यह अन्तिम उपदेश निश्चित ही सम्पूर्ण मानवता के लिए अमरत्व का सन्देश बन गया।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि ''ईसाई धर्म वह सदाचारमूलक (Ethical), ऐतिहासिक, सार्वभौमिक (Universal), एकेश्वरवादी व उद्धारक (Redemptive) धर्म है जिसमें मनुष्य का ईश्वर से सम्बन्ध ईसा मसीह के माध्यम से स्थापित किया जाता है।'' वास्तव में अपने अनुयायियों को धर्म के पथ पर रखने तथा उन्हें भ्रष्ट होने से बचाने के लिये ईसाई धर्म उनके सामने अपने दस आदेशों (Ten Commandments) को प्रस्तुत करता है जिनके द्वारा मनुष्य के केवल व्यक्तिगत जीवन पर ही नियन्त्रण नहीं किया गया, बल्कि स्वस्थ सामाजिक सम्बन्ध स्थापित करने के लिए भी आवश्यक निर्देश दिये गये। ईसाई धर्म का परम्परागत रूप कैथोलिक मत है, जबकि उसी का आधुनिक रूप प्रोटेस्टेन्ट मत है जिसके अनुसार कर्म ही पूजा है। इन दोनों मतों को मानने वाले भारत में पाये जाते हैं जिनकी संख्या डेढ़ करोड़ के लगभग है।

(iv) **जैन धर्म** (Jainism)—जैन धर्म भारत का एक अति प्राचीन धर्म है। इस धर्म की उत्पत्ति कब हुई, यह निश्चित रूप से बताना सम्भव नहीं है। जैन धर्म के संस्थापक वर्द्धमान महावीर माने जाते हैं। लेकिन जैन अनुश्रुति के अनुसार जैन धर्म का अस्तित्व उनके 24 तीर्थंकरों के उपदेशों के फलस्वरूप हुआ है। पहले तीर्थंकर ऋषभदेव तथा बाइसवें तीर्थंकर अरिष्टनेमि का उल्लेख किया जाता है। तेइसवें तीर्थंकर महात्मा पार्श्वनाथ का जन्म ईसा से पूर्व करीब 8वीं शताब्दी में हुआ था। आप एक ऐतिहासिक विभूति थे। आपने 84 दिन की कठोर तपस्या के बाद परम ज्ञान प्राप्त किया और अपने जीवन के 70 वर्ष जैन धर्म के प्रचार में समर्पित किये। पार्श्वनाथ के बाद भगवान महावीर की महानता इसी से स्पष्ट है कि आपने परिवर्तित समय के अनुसार पार्श्वनाथ के सिद्धान्तों को सुधारने और फिर से स्थापित करने का भरसक प्रयास किया। मोटे रूप में, जैन धर्म में सम्पूर्ण जगत को दो द्रव्यों या श्रेणियों में बाँटा गया है—जीव और अजीव। जैन धर्म में कर्म को सूक्ष्मतम भूततत्व के रूप में माना जाता है। यह धर्म अनीश्वरवाद में विश्वास करता है। इसके अनुसार ईश्वर अथवा सर्वोच्च सत्ता जैसी कोई चीज नहीं है। जैन धर्म का सर्वाधिक योगदान उसके व्यावहारिक उपदेश या साधना में निहित है जो कि जैन दर्शन के 'सम्यक् दर्शन', 'सम्यक् ज्ञान' और 'सम्यक् चरित्र' के रूप में परिलक्षित होते हैं।

(v) **बौद्ध धर्म** (Buddhism)—एक अन्य महत्वपूर्ण धर्म बौद्ध धर्म है, जिसके अनुयायी आज विश्वभर में देखने को मिलते हैं। बौद्ध धर्म के प्रवर्तक गौतम बुद्ध थे। छठी शताब्दी ई. पू. हिन्दू कर्मकाण्ड में धर्म की जटिलता, पशुओं की बलि, अन्धविश्वास, बाहरी दिखावा आदि दोष उत्पन्न हो गये थे—बौद्ध धर्म उसी की प्रतिक्रिया थी। इस धर्म में सत्य दृष्टि, सत्य भाव, सत्य भाषण, सत्य कर्म, सत्य निर्वाह, सत्य प्रयत्न, सत्य विचार और सत्य ध्यान—इन आठ संयमों पर विशेष बल दिया जाता है। सत्य और अहिंसा इस धर्म का आधार है।

(vi) **सिख धर्म** (Sikhism)—महान् ऐतिहासिक धर्मों में सिख धर्म का एक प्रमुख स्थान रहा है। सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानक देव जी थे। सिख परम्परा में दस गुरुओं की बात मानी जाती है। गुरु नानक जी, जिन्होंने सिख धर्म की नींव डाली, के बाद नौ गुरु और हुए। ये हैं—गुरु अंगददेव (1504-1552), गुरु अमरदास (1479-1574), गुरु रामदास (1534-1581), गुरु अर्जुन देव (1563-1606), गुरु हरगोविन्द (1595-1644) गुरु हरिराय (1630-1661), गुरु हरिकिशन (1656-1664), गुरु तेग बहादुर (1621-1675), और गुरु गोविन्द सिंह (1666-1708)। पाँचवें गुरु श्री अर्जुन देव जी ने पहली बार पहले चार गुरुओं की रचनाओं को एक ग्रन्थ में संकलित किया जिसे कि 'आदि ग्रन्थ' (गुरु ग्रन्थ साहिब) के नाम से जाना गया। यह पंजाबी साहित्य की महान कृति है। यह धर्म एकेश्वरवादी तथा मूर्तिपूजा विरोधी है। ईश्वर सर्वव्यापी, अनन्त, अखण्ड, अभेद, अछेद और अनादि है। मनुष्य को सदैव ही उसके चिन्तन-ध्यान में लीन रहना चाहिए। नानक ने क्रमशः शरण, ज्ञान, कर्म और सच—इन चार सोपानों को पार पर ब्रह्म प्राप्ति का मार्ग बतलाया है। सिख धर्म में जाति-पाँति, धन, पठन-पाठन, कुलीनता आदि के आधार पर किसी भी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं किया जाता, सभी मनुष्य समान हैं।

(vii) **अन्य प्रमुख धार्मिक सम्प्रदाय** (Other Major Religious Sects)—जैसा कि उपर्युक्त वर्णन में बताया गया है कि भारत अनेक धर्मों की स्थली है। उपर्युक्त धर्मों के अतिरिक्त यहाँ अनेक धार्मिक सम्प्रदाय भी पाये जाते हैं। राजा राममोहनराय के नेतृत्व में ब्रह्मसमाज, सर्वश्री रानाडे द्वारा स्थापित प्रार्थना समाज और प्रमुख रूप से स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त धार्मिक मतों या पंथों के क्षेत्रीय व स्थानीय स्वरूपों के रूप में वीर शैव मत, कबीर पन्थ, शाक्त धर्म, वैष्णव धर्म,

Scanned with CamScanner

आदि के नामों का उल्लेख किया जा सकता है। इतना ही नहीं, सम्पूर्ण भारत में धार्मिक मतों के सैकड़ों की संख्या में स्थानीय स्वरूप देखने को मिलते हैं।

Scanned with CamScanner